मिशन शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद

हिन्दी, गणित, अंग्रेजी

काव्यरूप

कलरव

1

बेसिक काव्य सृजन

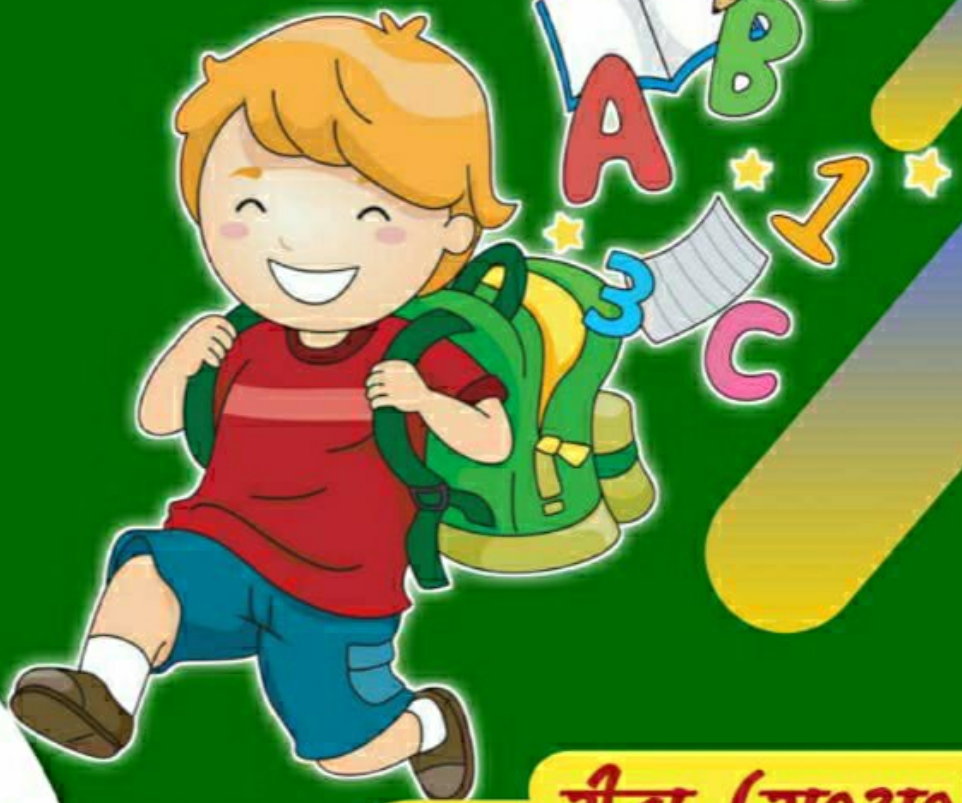

काव्य निर्माण

रीना (स०अ०)
प्रा० वि० सालेहनगर, जानी, मेरठ

पाठ- 1 "मेरा देश"

भारत प्यारा देश महान,
सबसे निराली देश की शान।
हम सबकी देश है जान,
देश पर है सब कुछ कुर्बान।
जग में करेंगें देश का नाम,
देश का हम बढ़ाएँगे मान।

पाठ- 2 "बाग"

मन को भाये प्यारा बाग,
पक्षी गाये न्यारा राग।
पेड़ के ऊपर बैठा बन्दर,
देखो कितना मस्त कलन्दर।
पेड़ के नीचे कुत्ता आया,
मुँह में अपने यह क्या लाया?

पेड़ पर देखो लगे हैं आम,
उनको खाता मिठू राम।
पेड़ की नीचे है चारपाई,
उस बैठी है एक माई।
बाग में देखो सुन्दर फूल,
मीना झूला रही है झूल।

कुम्हार घुमाये गोल चाक,
देखो दूर है एक तालाब।
मेंढक बैठा उसके पास,
खरगोश खा रहा है घास।
पास में देखो गाय प्यारी,
दूर जा रही है बैलगाड़ी।

पाठ- 3 "तालाब"

देखो-देखो सुन्दर तालाब,

एक मेंढक करे टर्र-टर्र आवाज।

दो खरगोश करते हैं बात,

तीन चूहें हैं उनके पास।

चार चिड़ियाँ गाती हैं गीत,

पाँच कछुए हैं सबके मीत।

पाठ- 4 "हुआ सवेरा"

हुआ सवेरा बच्चों जागो,
खेलो-कूदो, दौड़ो-भागो।
रोज करो सब दातून-कुल्ला,
रोज नहाओ लल्ली-लल्ला।
रोज नहाकर खाओ खाना,
खाना खाकर पढ़ने जाना।

बच्चे खुशी से गाते हैं,
जल्दी हम उठ जाते हैं।
मंजन-कुल्ला करते हैं,
भर-भर मग्गा नहाते हैं।
जमकर करते खूब नास्ता,
पढ़ने जाते लेकर बस्ता।

पाठ- 5 "लिखने की तैयारी"

बच्चों कर लो तैयारी,
आ गई लिखने की बारी।
रंग के घोल में डालो,
अँगूठा और उंगली प्यारी।
उनकी छाप से बनाओ,
तितली, मछली, चिड़िया प्यारी।

बच्चों बनाओ रेत की ढेरी,
फेरो उस पर उंगली प्यारी।
आड़ी, तिरछी, रेखा न्यारी,
खींचों बच्चों खूब सारी।
दीवार पर हैं पट्टी हरी-हरी,
बनाओ चीजें प्यारी-प्यारी।

पाठ- 6 वर्णमाला गीत

आओ! सीखे वर्णमाला,
आकर अपनी पाठशाला।
इसमें होते स्वर व्यंजन,
13 स्वर और 36 व्यंजन।
सबका होता ताल- मेल,
वर्णों की फिर चलती रेल।।

अ होता है सबका इन्जन,
अ से अः तक होते स्वर।
क से ज्ञ तक होते व्यंजन,
तीन होते हैं देशज वर्ण।
ड़ ढ़ और श्र हैं ये वर्ण,
वर्णमाला में 52 हैं वर्ण।।

पाठ- 6 वर्णमाला गीत (अ से अः तक)

अ से अनार, आ से आम,
पढ़ो-लिखो और बनो महान।
इ से इमली, ई से ईख,
अच्छी-अच्छी बातें सीख।
उ से उल्लू, ऊ से ऊँठ,
बच्चों! कभी न बोलो झूठ।।

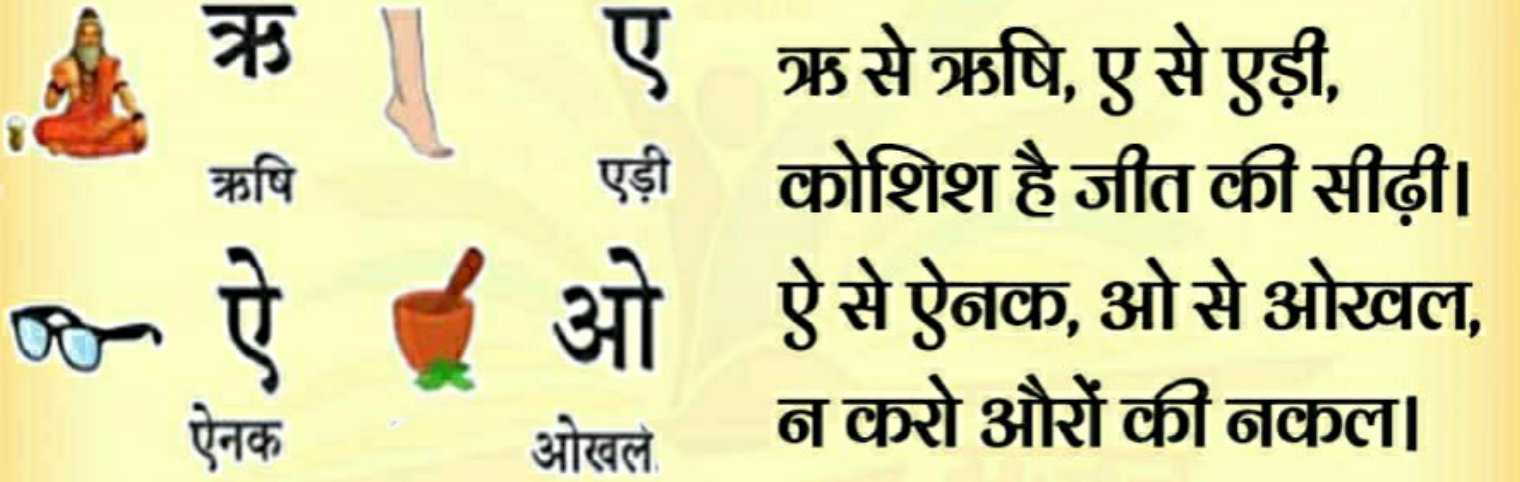

ऋ से ऋषि, ए से एड़ी,
कोशिश है जीत की सीढ़ी।
ऐ से ऐनक, ओ से ओखल,
न करो औरों की नकल।
औ से औरत, अं से अँगूर,
बुरे काम से सब रहो दूर।
अः है देखो खाली-खाली,
स्वरमाला बन गई सुहानी।।

पाठ- 6 वर्णमाला गीत (क से ञ तक)

क से कबूतर, ख से खरगोश,
दूसरे पर न डालो अपना दोष।
ग से गमला, घ से घर,
बुरा काम करने से डर।
ङ होता सदा ही खाली,
क वर्ग की बिन्दी मतवाली।।

च से चम्मच, छ से छाता,
सबका भला करे विधाता।

ज से जग, झ से होता झरना,
कभी किसी को दुख न देना।

यहाँ भी होतो 'ञ' खाली,
च वर्ग की बिन्दी मतवाली।।

पाठ- 6 "वर्णमाला गीत" ट से न तक

ट से टमाटर, ठ से ठठेरा,

जागो बच्चों! सुबह-सवेरा।

ड से डमरू, ढ से ढक्कन,

साफ रखो अपना तन-मन।

ण भी होता खाली

ढ वर्ग की बिन्दी मतवाली।।

ट

टमाटर

ठ

ठठेरा

ड

डमरू

ढ

ढक्कन

ण

त

तरबूज

थ

थरमस

त से तरबूज थ से थरमस,

खिल-खिलाकर खूब हँस।

द से दवात, ध से धनुष,

बच्चों! सभी को रखो खुश।

न से नल देता जल,

त वर्ग का है पँचम अक्षर।।

द

दवात

ध

धनुष

न

पाठ- 6 "वर्णमाला गीत" प से ह तक

प से पतंग, फ से फल,
प्यासे को पिलाओ जल।
ब से बकरी, भ से भेड़,
बच्चों! खूब लगाओ पेड़।
म से मटर है सेहत भर,
प वर्ग का है पँचम अक्षर।।

प
पतंग

फ

फल

ब

बकरी

भ

भेड़

म

मटर

य

यज्ञ

र

रथ

ल

लट्टू

व

वन

श

शलजम

ष

षटकोण

स

सरसो

ह

हल

य से यज्ञ, र से होता रथ,
मत लगाओ बुरी लत।
ल से लट्टू, व से है वन,
सेहत है सबसे बड़ा धन।
श से शलजम, ष से षटकोण,
सच का साथ दो, रहो न मौन।
स से सरसों, ह से हल,
बुरे काम का बुरा है फल।।

पाठ- 6 "वर्णमाला गीत" क्ष, त्र, ज्ञ और श्र

क्ष से क्षत्रिय, त्र से त्रिशूल,
बच्चों! तुम इस बगिया के फूल
ज्ञ से ज्ञानी, श्र से श्रम,
बच्चों! करो खूब परिश्रम।
मन लगाकर खूब तू पढ़,
लिख पढ़कर, ज्ञान को गढ़।।

क्ष त्र

क्षत्रिय

त्रिशूल

ज्ञ श्र

ज्ञानी

श्रम

पाठ- 7 "पतंग"

देखो-देखो उड़ी पतंग,
रंग-बिरंगे रंगों के संग।
अपनी पूँछ लहराए पतंग,
सबको नाच दिखाए पतंग।
चोंच लड़ाए कबूतर संग,
बच्चों के मन भाये पतंग।।

पाठ- 8 "रसोई"

रसोई है समान से भरी,

रखी है सब्जी हरी-भरी।

इसमें जल रहा है चूल्हा,

रखा उस पर एक पतीला।

पानी का रखा है घड़ा,

पास में सिलबट्टा है पड़ा।।

छिक्के में रखी है मठकी,

पास में ठँगी तीन कूकड़ी।

नीचे रखा एक बड़ा तास,

दो कनस्तर रखे हैं पास।

लालटेन करती है चाँदना,

नीचे बिछा है एक बिछौना।।

पाठ- 9 "बतख और चूजा"

बतख का बच्चा और चूजा,

दोनों संग में घूमने निकले।

आगे चलकर मिला तालाब,

बतख के बच्चे ने लगायी छलाँग।

चूजे ने की उसकी नकल,

डूबते-डूबते बचा ठिकाने लगी अकल।।

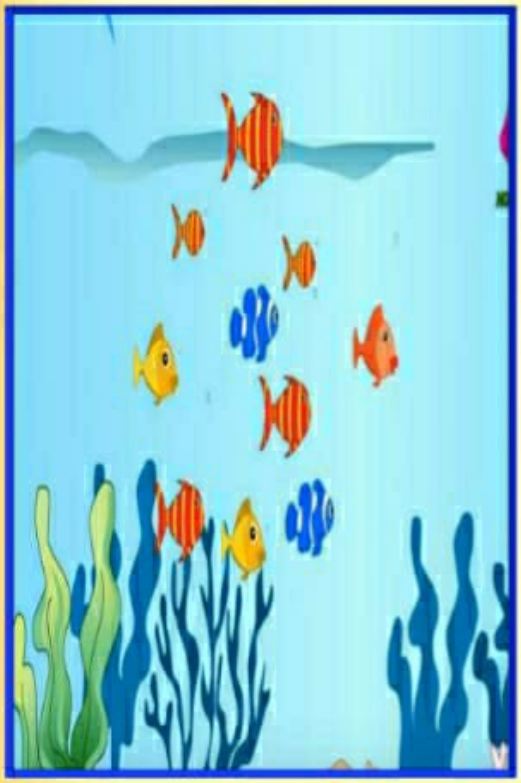

बच्चों! बहुत जरूरी है पानी,

प्यास बुझाता, है जीवनदानी।

नल, नहर, बम्बे से मिलता है पानी,

इसे गन्दा करने की नहीं करेंगे नादानी।

सब मिलकर बचायेंगे पानी,

बात ये हम सबने है ठानी।।

पाठ- 10 "सैर सपाटा"

एक चिड़िया के बच्चे दो,
तीनों निकले घूमने को।
चार दिशा में चक्कर लगाया,
पाँच जगह पर दाना खाया।
छः जगह पर पीया पानी,
सातवें घण्टे घर जाने की ठानी।
आठवें घण्टे हुई थकान,
नौवे घण्टे किया आराम।।

गेंद, छाता और डिब्बा,
तीनों करने चले सैर सपाटा।
चार पैरों वाला मिला खरगोश,
पाँच कोनो वाला तारा भी चला साथ।
छः ढाँग की चीटी भी संग चली,
सात छल्ले की फिर इल्ली मिली।
आगे मिला मकड़ा पैर जिसके आठ,
नौ बिंदी वाली तितली भी चली साथ।
नौ के नौ पहुँचे पहाड़ी,
मजे से खेले-कूदे सारे याड़ी।।

पाठ- 11 "गिनो, बताओ"

पेड़ से सूखी डाल गिरी,
जबरू ने लपककर उठा ली।
छोट-छोटे उसके टुकड़े किए,
सब एक गट्ठर में रख दिए।
टुकड़ों को मिलाकर गट्ठर बना,
बच्चों! मिलाना माने है जोड़ना।।

= 1
= 2
= 3
= 4
= 5

आओ बच्चों! तुम्हें कराए,
आज जोड़ का ज्ञान।
एक में एक मिलता जाए,
बढ़ता जाए संख्या मान।
एक चिड़िया बो रही थी जौ,
एक और आ गई मिलकर हुई दो।
दो चिड़िया पढ़ने की शौकीन,
एक और आ गई मिलकर हुई तीन।
तीन चिड़िया डाल रही थी अचार,
एक और आ गई मिलकर हुई चार।
चार चिड़िया पी रही थी छाछ,
एक और आ गई मिलकर हुई पाँच।।

माँ ने छुटकी को बुलाया,
प्यार से आवाज लगाकर।
बिटिया रानी लेकर आओ
तीन टमाटर तोड़कर।
छुटकी गई टोकरी लेकर,
पेड़ पर थे चार टमाटर।
उसने तोड़े तीन टमाटर,
बताओ कितने बचे अब?

4 - 3 = 1

पाठ- 12 "स्टेशन"

देखो-देखो स्टेशन प्यारा,
सुन्दर है यहाँ का नजारा।
कुली-कुली आवाज लगाता,
चाय-चाय चाय वाला चिल्लाता।
फल पुस्तक के लगे हैं ठेले,
पुलिस अंकल घूम रहे अकेले।
ठी ठी अंकल हरी झंडी दिखाते,
ड्राइवर अंकल रेल चलाते।।

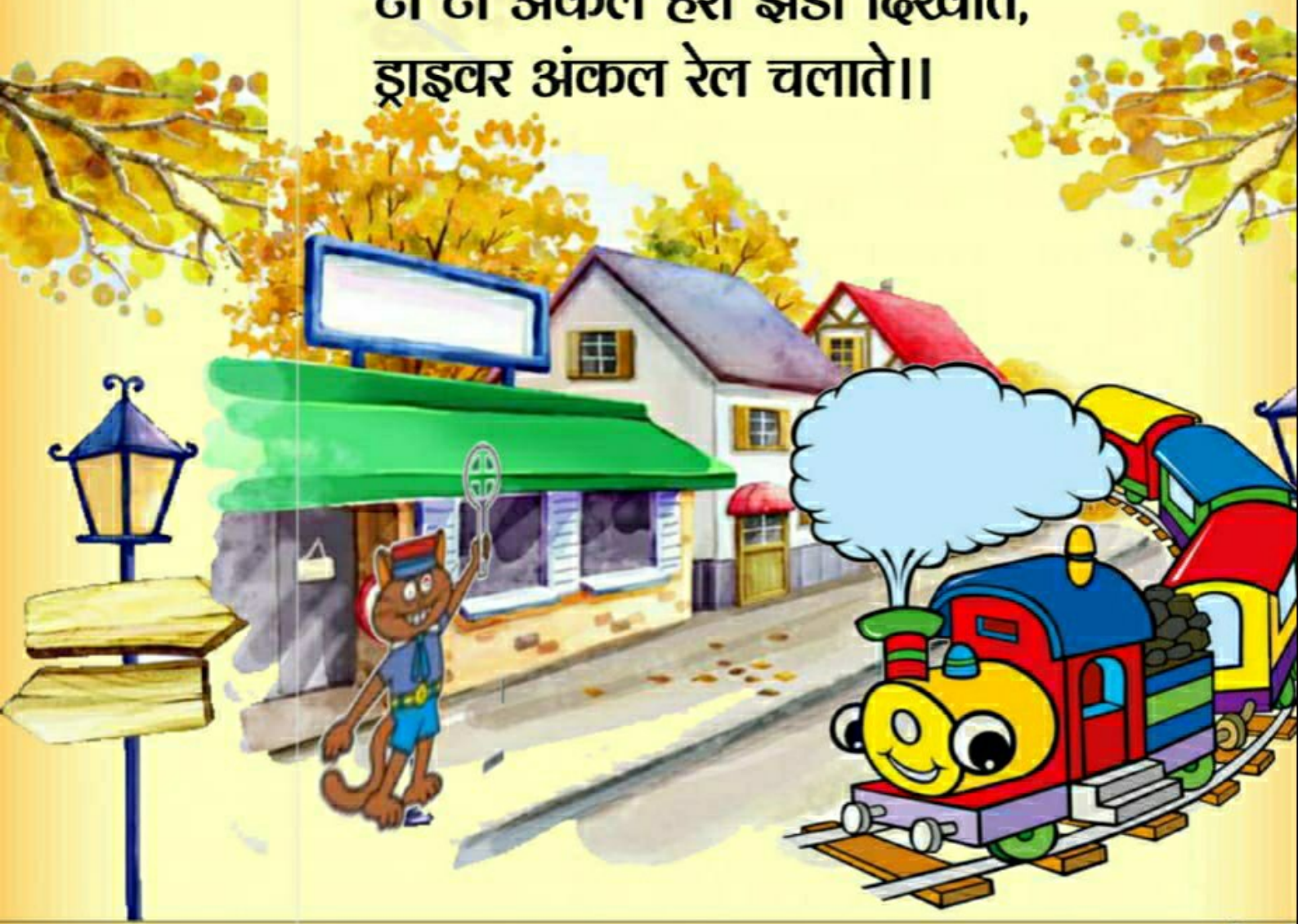

पाठ- 13 "उड़े गुब्बारे"

नीतू गई बाजार,
उसने खरीदे गुब्बारे चार।
आई तेज हवा,
एक गुब्बारा छूठ गया।
गुब्बारे थे रंगीन,
बाकी बच गए तीन।
एक गुब्बारा ले गई चिड़िया,
ऊपर उड़ गई वो।
बाकी बच गए दो,
एक गुब्बारा फूठ गया।
वह मुस्कायी यह देख,
बाकी बचा एक।
वो भी उसने उड़ा दिया,
एक भी नहीं बचा।
फिर भी वह खुश है,
एक भी नहीं माने शून्य है।

चिड़िया-चिड़िया उड़ती जाए,
चिड़िया-चिड़िया खुशी से गाए।
पाँच छोटी चिड़िया खा रही थी अनार,
एक चिड़िया उड़ गई, बाकी बची चार।
चार छोटी चिड़िया बजा रही थी बीन,
एक चिड़िया उड़ गई, बाकी बची तीन।
तीन छोटी चिड़िया बो रही थी जौ,
एक चिड़िया उड़ गई, बाकी बची दो।
दो छोटी चिड़िया बना रही थी केक,
एक चिड़िया उड़ गई बाकी बची एक।
एक छोटी चिड़िया बन गई हीरो,
वो भी उड़ गई बाकी बची जीरो।

पाठ- 14 "जया, जगत और जुगनू"

जया और जगत,
खेल रहे थे मैदान में।
हुआ अँधेरा खेलते-खेलते,
दोनों घर को चले।
पीछे से आवाज आई,
खटर-पटर, धप-धप।
दोनों को लगने लगा डर,
गाय तेजी से दौड़ती आई।
उसको देख दोनों बोले,
अरे! क्यों डरे हम?
तभी जगमग करता जुगनू मिला,
अहा! देखो उजाला।
देख उसे दोनों खुश हुए,
उसके पीछे-पीछे चल दिए।।

सुबह-सुबह मुर्गा बोला,
कुकडू कू-कुकडू कू।
मुर्गे की आवाज को सुनकर,
करे कबूतर गुटर गूँ।
बिल्ली मौसी बोली म्याऊँ,
कौवा गाना गाये काँव-काँव।
बकरी भी सँग में बोली मैं-मैं,
गाय उसको सुनकर बोली भैं-भैं।
कुत्ता सबको सुनकर बोला भौं-भौं,
बन्दर छत पर आकर बोला खौ-खौ।।

पाठ- 15 "दादा जी"

भाग- 1

दादा जी ने पौधे लगाए,
आम, नीम, जामुन, कठहल।
गोलू, नीलू दादा से बोले,
हम भी पौधे लगायेंगे।
इन्हें रोज पानी देंगे,
इनका ध्यान रखेंगे।
ये बड़े होकर फल देंगे,
हम खूब मजे से खायेंगे।।

भाग- 2

फल हमारे मन को भाते,
हमें ये बीमारी से बचाते।
केले, तरबूज, आम, पपीते,
इन्हें हम छील कर खाते।
अनानास, सन्तरा, अँगूर रसीले,
मुँह में ये खूब रस घोले।
अमरूद, सेब, चीकू बड़े मीठे,
इन्हें हम छिलका सहित हैं खाते।
अनार, बेलपत्र बाहर से हैं कड़े,
पर अन्दर से हैं स्वादिष्ट बड़े।।

पाठ- 16 "इकाई और दहाई"

भाग- 1

नौ मोती थे अकेले,
बोले चलो घूमने चले।
नौ तक थे सब इकाई,
सबने संग में दौड़ लगाई।
वहाँ एक मोती से मिले,
सारे मिलकर दस बने।
दस की बन गई एक दहाई,
उनकी बात समझ में आई।
एक दहाई में एक इकाई मिलाकर
दस और एक ग्यारह होता।
इकाई-दहाई के मेल से,
गिनती का क्रम बढ़ता जाता।।

भाग- 2

मीतू मम्मी के संग,
चौराहे पर थी खड़ी।
खम्बे पर तीन बत्ती,
उसको दिखाई पड़ी।
लाल, पीली और हरी,
यह देख मम्मी से बोली।
मुझे इनका मतलब समझाओ,
मम्मी बोली बिटिया रानी।
लाल बताती रूक जाओ,
पीली बताती चलने को
तैयार हो जाओ।
हरी बताती आगे-आगे बढ़ते जाओ।

पाठ- 17 "लता की कक्षा"

चलो एक से सौ तक पहुँचे,
कोई भी संख्या बीच में ना छूटे।
नौ इकाई संग एक इकाई,
दस की बन गई एक दहाई।
एक दहाई संग एक इकाई,
आगे बढ़ते जाओ भाई।
कोई किसी से भी ना रूठे,
किसी संख्या का साथ ना छूटे।
दहाई ने दस बार छलाँग लगाई,
तब हम सौ तक पहुँचे भाई।।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27	28	29	30
31	32	33	34	35	36	37	38	39	40
41	42	43	44	45	46	47	48	49	50
51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
61	62	63	64	65	66	67	68	69	70
71	72	73	74	75	76	77	78	79	80
81	82	83	84	85	86	87	88	89	90
91	92	93	94	95	96	97	98	99	100

पाठ- 18 "जाड़ा, गरमी और बरसात"

जाड़ा आया, जाड़ा आया,

ठिठुरन अपने संग में लाया।

सूफी को भाता है जाड़ा,

खाती गरम गाजर का हलुआ।।

गरमी आई, गरमी आई,

तपन अपने संग में लाई।

गोकुल को भाती है गरमी,

खाता ठण्डी आइसक्रीम कुल्फी।।

बारिश आई, बारिश आई,

बादल-बिजली संग में लाई।

सबके मन को खूब भाई,

छप-छप करके धूम मचाई।।

पाठ- 19 "मापन"

भाग- 1

मापन की अमानक इकाइयाँ,
हाथ, कदम, बालिश्त, उंगलियाँ।
नापते हैं हम इनसे दूरियाँ,
लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाइयाँ।
कदम से नापो घर से स्कूल की दूरी,
हाथ से अपने आस-पास की दूरी।
बालिश्त से नापो मेज की ऊँचाई,
अंगुल से पेंसिल बॉक्स की चौड़ाई।।

भाग- 2

मानक इकाइयों से भी करते माप,
लीटर, मीटर, ग्राम-किलोग्राम।
लीटर से दूध, पानी नापते,
मीटर से लम्बाई दूरी मापते।
जानो किसका कितना भार,
बाट-तराजू कर लो तैयार।
एक पलड़े में ग्राम-किलोग्राम,
दूजे में रखो समान।।

पाठ- 20 "चंदा मामा"

भाग- 1

चंदा मामा प्यारे,
सबके राज दुलारे।
संग में हैं तारे,
देखो कितने सारे!
चंदा मामा मुस्काते,
टिमटिम करते तारे।
आसमान की सैर जब करते,
लगते कितने प्यारे!

भाग- 2

गेंद होती गोल,
माचिस होती चपटी।
चकोर होता गोटा,
माचिस है सरकती।
बेलन है लुढ़कता,
गेंद भी लुढ़कती।।

पाठ- 21 "मीना की दुकान"

अमन के चाचा घर आए,

बच्चे उनसे मिलने आए।

चाचा बच्चों को लेकर,

गए मीना की दुकान पर।

वहाँ थे बहुत सारे खिलौने,

उन पर दाम थे लिखे।

कौन खिलौना कितने का?

संख्या देख बच्चों ने समझा।

रूपये से दाम का मिलान किया,

फिर खिलौने का दाम दिया।।

पाठ- 22 "जूही का जन्मदिन"

जूही का जन्मदिन,
स्कूल में मनाया।
बच्चों ने स्कूल को,
गुब्बारों से सजाया।
दीदी ने खिलाई मिठाई,
सबने खूब ताली बजाई।
सभी खुशी से नाचे कूदे,
जूही को दी खूब बधाई।।